SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

औपनिवेशिक बिहार में उद्योग, वाणिज्य एवं व्यापार : एक ऐतिहासिक अध्ययन

जयन्त कुमार सिन्हा, Ph.D., पर्यवेक्षक, इतिहास विभाग
आर. एम. डब्लू कॉलेज, नवादा, बिहार, भारत
सीमा कुमारी, शोधार्थी, इतिहास विभाग
मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
जयन्त कुमार सिन्हा, Ph.D.
सीमा कुमारी, शोधार्थी

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/01/2024
Revised on : -----
Accepted on : 18/03/2024
Plagiarism : 01% on 09/03/2024

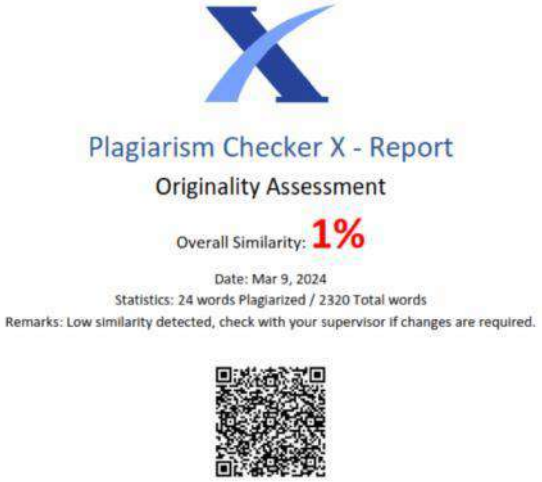

शोध सार

प्रस्तुत शोध–पत्र ''औपनिवेशिक बिहार में उद्योग, वाणिज्य एवं व्यापार : एक ऐतिहासिक अध्ययन'' पर आधारित है। औपनिवेशक काल में भी भारत सहित बिहार में भी एक स्थान से दूसरे स्थान व्यापार का काम होता था। यह व्यापार स्थल मार्ग और जल मार्ग दोनों से होता था। इन मार्गों पर एकाधिकार प्राप्त करने के लिए विविध राष्ट्रों में समय–समय पर संघर्ष होता रहता था। जहाँ तक बिहार में उद्योग का सवाल है, यहाँ सबसे बड़ी आबादी का जीवन–जीविका का आधार कृषि है। इसके बाद चीनी उद्योग, चमड़ा उद्योग और वस्त्र उद्योग का विकास भी उसी के अनुरूप हुआ। इस कामों के उन्नयन से रोजगार की संभावना बढ़ी है। बिहार से अन्य राज्यों में पर्याप्त मात्रा में चमड़ा का कच्चा माल निर्यात होता है। इससे बिहार की आर्थिक स्थिति में बदलाव हुआ है। यहाँ खासकर उत्तरी बिहार में जूट की खेती सबसे अधिक होता है। इस कच्चे माल के कारण ही क्रमशः समस्तीपुर, पूर्णिया और कटिहार में जूट मिल को स्थापित किया गया ताकि बिहार की आर्थिक संरचना में परिवर्तन आ सके, लेकिन आज ये सारे कारखाने रूग्णावस्था में है। सरकार के उदासीनता के चलते ये सभी कारखाने बंद पड़े हैं। बंद पड़े मिलों को ठीक कर यदि चलाया जाये तो यहाँ के लोगों में रोजगार के पर्याप्त अवसर मिल सकते हैं।[1]

मुख्य शब्द

औपनिवेशक, उद्योग, वाणिज्य, व्यापार, बाजार.

परिचय

प्रस्तुत शोध पत्र ''औपनिवेशिक बिहार में उद्योग, वाणिज्य एवं व्यापार : एक ऐतिहासिक अध्ययन'' है।

इसमें बिहार के लघु उद्योगों के साथ–साथ भारी उद्योगों को रेखांकित करने का भरपूर प्रयास किया गया है। औपनिवेशिक काल में खासकर बिहार में ब्रिटिश व्यापारियों ने 1620 ई. में पटना के आलमगंज में व्यापारिक केन्द्र खोला। उस समय बिहार का सुबेदार मुबारक खान था। उसने अंग्रेजों को रहने की व्यवस्था के साथ ही जरूरत के सभी चीजों को मुहैया कराया ताकि यहाँ उद्योगों की स्थापना किया जा सके। कुछ फैक्ट्रियाँ खुली, लेकिन समुचित व्यवस्था के कमी के कारण 1621 में फैक्ट्रियाँ बंद हो गई। यूरोपीय गतिविधियों के द्वारा बिहार का व्यापार पश्चिम एशिया, मध्य एशिया के अलावे अन्य देशों के साथ बढ़ता गया। शुरू में बिहार व्यापारिक गतिविधियों का केन्द्र रहा। यहाँ एडवर्ड, टेरी, राल्फफिटन, पिटरमुंडी, ट्रैवर आदि व्यापारियों ने बिहार में चल रहे व्यापारिक केन्द्रों का निरीक्षण किया साथ ही किन क्षेत्रों में कौन से औद्योगिक कारखाने लगाये जाय इस पर भी विचार किया गया। ऐसे बिहार का सबसे बड़ा उद्योग कृषि है, यहाँ तक कि एक बड़ी आबादी की जीविका का साधन कृषि ही है। कालांतर में चलकर कृषि उद्योग ही अन्य उद्योग का आधार बना।

बिहार में कृषि उद्योग के अलावा विकसित उद्योग की संख्या न्यून थी। बिहार में गन्ना की सबसे अधिक खेती चम्पारण के बेतिया में होता था इसलिए इस इलाके के किसानों को गन्ना उत्पादन का लाभ मिल सके। इसको ध्यान में रखकर 1840 ई. में बेतिया में डचों द्वारा पहला चीनी कारखाना खोला गया। आजादी से पूर्व बिहार में मिलों की संख्या करीब 33 थी जो पूरे देश के लिए अकेले 40 प्रतिशत चीनी का उत्पादन करते थे। बीते वर्ष के आँकड़ो से पता चलता है कि बिहार अकेले चीनी उत्पादन में दूसरा स्थान रखता था लेकिन वर्तमान में उत्पादन में कमी आने के कारण इसका स्थान 7वाँ रह गया है। बिहार में वर्तमान में 8 चीनी मिले हैं। इनमें कुछ जर्जर एवं बंद हो चुकी है। इसमें सिर्फ रीगा में स्थित चीनी मिल काम कर रहा है, शेष सारी चीनी मिले बंद हो गया है। बिहार में चीनी मिल, जूट, पेपर, सूत व सिल्क उद्योगों का गौरवशाली अतीत रहा; किन्तु ब्रिटिश शासन की गलत नीतियों के चलते उद्योग धन्धे का धीरे–धीरे ह्रास होता चला गया। नतीजा यह हुआ कि इन मिलों में काम करने वाले कर्मचारी और मजदूर के सामने रोजगार की समस्या आ गयी।[2]

बिहार में हस्तकरघा उद्योग का भी धीरे–धीरे पतन होने लगा जिसका सीधा आर्थिक असर उस काम से जुड़े लोगों के साथ–साथ बाजार पर भी पड़ा। ब्रिटिश हुकूमत ने भारत में व्यापार की खुली छूट दी तब जाकर भारतीय बाजार में कुछ सुधार आ सका। कालांतर में भारतीय बाजारों में सस्ते दरों पर मशीन द्वारा निर्मित समान मिलने लगे। साथ–ही–साथ परम्परागत रूप से जो शिल्पकार काम करने वाले थे वे पुनः अपने–अपने घरों में शिल्प का काम शुरू कर दिये। इसका सीधा प्रभाव बिहार के शिल्पकारों पर साफ–साफ दिख रहा था। ब्रिटिश नीति के कारण हस्त शिल्प से जुड़े उद्योगों पर पड़ने के कारण यह उद्योग भी धीरे–धीरे उन्नति के बजाय पतन की ओर अग्रसर होने लगा। ब्रिटिश सरकार के सहयोगात्मक नीति के चलते बिहार में उद्योग नहीं पनप सका।

अविभाजित बिहार में चीनी, जूट, पेपर, सूत व सिल्क का अपना गौरवशाली अतीत रहा है। राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री श्री कृष्ण सिंह के समय बिहार पूरे देश में दूसरे स्थान पर रहा। उनके मुख्यमंत्रीत्व काल में बरौनी रिफाइनरी, सिन्दरी व बरौनी में उर्वरक कारखाना खोला गया। बोकारो में स्टील प्लांट, बरौनी में डेयरी, हटिया में भारी इंजीनियरिंग उद्योग (एच.ई.सी) की स्थापना किया गया लेकिन सरकार के गलत नीतियों और इच्छा शक्ति की कमी के कारण ये सारे कारखाने धीरे–धीरे बंद होते चले गये।

बिहार में दरभंगा की सकरी चीनी मिल बंद हुआ। 2005 में बिहार स्टेट शुगर डेवलपमेंट कॉरपोरेशन ने राज्य की सभी चीनी मिलों का फिर से चालू करने का प्रस्ताव आया। इस क्रम में कई मिलों को प्राइवेट के हाथों में सौंप दिया गया और कुछ इथेनॉल के उत्पादन में लग गये। गन्ने के रस से इथेनॉल बनाया जाता था। इस तरह निवेशकों की उदासीनता की वजह से अधिकांश चीनी की मिले कबाड़ के रूप में तब्दील हो गया। मिलों के बंद होने के कारण गन्ना का उत्पादन करने वाले किसानों पर आर्थिक संकट के बादल मडराने लगे। बहुत सारे किसानों ने गन्ना मिल के लिए अपने उपजाऊ भूमि को दिया था वह भी उनके हाथ से निकल गये।[3]

इसी तरह सीमांचल के कटिहार, अररिया और पूर्णिया में जूट मिलों की स्थापना की गई, किंतु ये सारी जूट

की मिले आर्थिक अनुदान की कमी की वजह से प्रभावित होने के साथ स्थानीय समस्याओं और राजनीतिक के कारण बंद पड़ी है। जूट कैपिटल के रूप में विख्यात कटिहार में एक नेशनल जूट मैन्युफैक्चरिंग कॉरपोरेशन नामक मिल 2008 से ही बंद है। सिर्फ समस्तीपुर जिले के मुक्तापुर में 80 एकड़ में स्थित 125 करोड़ रूपये के टर्नओवर वाली रामेश्वर जटू के करीब चार साल पूर्व बंद होने से 4200 कर्मचारी बेरोजगार हो गये हैं, साथ ही इसका सीधा असर जूट उत्पादक किसानों पर भी पड़ा। अगर सरकार गंभीरता से इस ओर ध्यान देने का काम करती तो इन स्थापित मिलों से उत्पादन के साथ सरकार को आर्थिक लाभ भी मिला। सोन नदी के किनारे बसा रोहतास जिले का डालमियानगर एक समय में राज्य का औद्योगिक हब के रूप में जाना जाता था; जहाँ सीमेंट कागज और वनस्पति के कारखाने थे। लाखों लोगों को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से इन कारखानों में रोजगार मिलता था। सिल्क सिटी के नाम से मशहूर भागलपूर में रेशम तथा हैंडलूम के हजारो केन्द्र थे जिनसे लाखों बुनकरों का जीवन–पालन होता था, किन्तु बिजली की अनुपलब्धता, बिगड़ी कानून व्यवस्था व गलत सरकारी नीतियों की वजह से इस उद्योग का बंटाधार हो गया। हालांकि समय के साथ बाजार में चाइनीज सिल्क के प्रवेश ने इसकी बर्बादी में महती भूमिका निभाई। अपनी बेहतरीन क्वालीटी के लिए प्रख्यात दरभंगा जिले के हायाघाट में स्थित अशोक पेपर मिल भी वर्ष 2003 से ही बंद है। 400 एकड़ जमीन में फैला यह पेपर मिल आज जंगल में तब्दील है। 1958 में दरभंगा महाराज द्वारा शुरू की गई इस मिल को किसानों ने भी अपनी जमीन दी थी।[4]

अंशुमान पाण्डेय पत्रकार ने बिहार में पुराने उद्योग बंद होने का प्रमुख कारण सरकारी सिस्टम की लापरवाही और निवेशकों द्वारा हाथ खींचना बताया। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि, यहाँ का सिस्टम ही नए निवेशकों के आने में बड़ी रूकावट है। शायद इन्हीं वजहों को ध्यान में रखकर 2005 में सरकार के गठन के बाद राज्य में वर्ष 2016 में औद्योगिक प्रोत्साहन नीति बनाई गई वहीं एक बड़ी कम्पनी के प्रतिनिधि नाम नहीं प्रकाशित करने की शर्त पर कहते हैं, ''अमूमन तो कागजी कारवाई में ही बहुत समय निकल जाता है। अगर आपको जमीन मिल जाएगी तो कब्जा के कारण लटक जाएगा। यदि कब्जा हो भी गया तो बैंक लोन नहीं देने के लिए हरसंभव हथकंडा अपनाता है। यह भी किसी तरह हो गया तो सरकारी लाइसेंस के लिए चप्पल घिसने पड़ते हैं।''

बिहार में उद्योगों को पनपने में सबसे अधिक कमी सरकार की नीतियों विशेष रूप से दोषी है। कांग्रेस के समय में सिर्फ कुछ कारखाना लगाये गये बाद में जितनी भी सरकारें आयी उद्योग के विकास के प्रति ध्यान नहीं दिया। यहाँ उद्योग नहीं बढ़ने का कारण सही माहौल का अभाव भी है। कल कारखानों की कमी की वजह से आज बिहार की एक बड़ी आवादी रोजी–रोजगार के लिए राज्य से बाहर जाने को मजबूर है।[5]

2005 के बाद से राज्य में औद्योगिक वातावरण बनाने का प्रयास जारी है। निवेशकों को सुरक्षा की गारंटी सरकार द्वारा देने की बात कही जा रही है; ताकि निवेशक अपनी पूँजी बिहार में निवेश कर सके। कल–कारखाने खुलने से बिहार के सभी स्तर के लोगों का काम मिलने की संभावना है। इस प्रस्तावित विचार को सही तरीके से अमलीजामा देने का प्रयास हो रहा है। बिहार में उद्योग लगने से लाखों लोगों को रोजगार का अवसर मिल सकेगा। जरूरत इस बात की है कि बिहार आने वाले उद्योगपतियों को प्रोत्साहित किया जाय तभी बिहार के माथे से मजदूरों का पलायन का कलंक मिट सकेगा।[6]

बिहार का औद्योगिक प्रदेश

औपनिवेशिक बिहार और वर्तमान बिहार में काफी परिवर्तन आया है। नवम्बर 2000 में बिहार विभाजन के बाद अधिकांश खनिज, वन संपदा एवं भारी उद्योग झारखंड राज्य का हिस्सा हो गया है। शेष बिहार में मात्र वे उद्योग बचे हैं जिनका आधार कृषि है।

उद्योगों के संकेन्द्रण के आधार पर बिहार में निम्नलिखित औद्योगिक प्रदेशों का विकास हुआ[7]:

- **चावल–मिल औद्योगिक प्रदेश:** बिहार के उत्तरी भाग में नेपाल की तराई वाले क्षेत्रों में चावल की गहन खेती के कारण चावल कूटने की अनेक छोटी–बड़ी मिल स्थापित है। पश्चिम में रामनगर से लेकर पूर्व में

किशनगंज तक चावल मिलों का विकास हुआ है। इसके मुख्य केन्द्र रामनगर, नरकटियागंज, रक्सौल, अदापुर, बैरगनिया, सीतामढ़ी, जनकपुर रोड, झंझारपुर जोगबनी और फारबिसगंज हैं।

- **चीनी औद्योगिक प्रदेशः** यह बिहार के उत्तरी–पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में स्थित है, जो बागमती नदी के पश्चिम और गंगा नदी के उत्तर में अवस्थित है। इस क्षेत्र में चीनी उद्योग का सर्वाधिक विकास हुआ है, जिसमें कुल 21 चीनी मिलें है। इसके अन्तर्गत पश्चिमी और पूर्वी चम्पारण, सिवान, गोपालगंज, सारण इत्यादि जिले आते हैं। मढ़ौरा, चनपटिया, महाराजगंज, पंचरूखी, हथुआ, नरकटियागंज हसनपुर इत्यादि मुख्य केन्द्र हैं।
- **जूट–औद्योगिक प्रदेशः** यह प्रदेश बिहार के उत्तरी–पूर्वी भाग में स्थित है, जिसके अन्तर्गत पूर्णिया, कटिहार, किशनगंज और अररिया जिले हैं। जूट उद्योग का विकास मुख्य रूप से कटिहार और पूर्णिया जिले में हुआ है।
- **पश्चिमी मध्यवर्ती औद्योगिक प्रदेशः** गंगा के दोनों किनारों पर पश्चिमी मध्यवर्ती औद्योगिक प्रदेश स्थित है, जिसका विस्तार बक्सर से मोकामा–बरौनी तक है। बरौनी सर्वाधिक महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र है जहाँ तेलशोधक कारखाना पेट्रो–रसायन, तापविद्युत, रासायनिक खाद एवं दुग्ध उद्योग विकसित है। मोकामा में चमड़ा उद्योग, मालगाड़ी का डब्बा बनाने का उद्योग, रसायन उद्योग और लोहे की छड़ तथा चादर बनाने का उद्योग विकसित है। पटना में सूती वस्त्र, विद्युत उपकरण, औषधि, बिस्कुट इत्यादि बनाने के उद्योग है। हाजीपुर औद्योगिक क्षेत्र की इलेक्ट्रॉनिक सिटी के रूप में विकसित किया जा रहा है।[8]
- **पूर्वी मध्यवर्ती औद्योगिक प्रदेशः** यह गंगा नदी के किनारे स्थित पूर्वी औद्योगिक प्रदेश है, जिसका विस्तार मुंगेर–जमालपुर, भागलपुर तथ कहलगाँव है। मुंगेर में बन्दुक और सिगरेट का कारखाना, जमालपुर में रेलवे वर्क शॉप, नाथनगर तथा भागलपुर में रेशम तथा तसर का कारखाना तथा कहलगाँव में सुपर ताप विद्युत केन्द्र स्थित है।
- **सोन–घाटी औद्योगिक प्रदेशः** यह प्रदेश बिहार के दक्षिण–पश्चिमी भाग में सोन नदी के तटीय क्षेत्र में स्थित है जिसका विस्तार जपला की डालमियानगर तक है। इसके पश्चिम में कैमूर की पहाड़ी स्थित हैं, जो खनिज और वन–संसाधन से सम्पन्न है।
- कैमूर के पठार से चूना–पत्थर, डोलोमाइट तथा सल्फर प्राप्त होता है, जिसके आधार पर सीमेंट और सल्फ्युरिक एसिड, कागज–उद्योग, लकड़ी–उद्योग, चीनी, चावल एवं वनस्पति उद्योग का विकास हुआ।
- **गया–गुरारू औद्योगिक प्रदेशः** यह एक छोटा औद्योगिक प्रदेश है, जिसके अन्तर्गत गया और गुरारू आते हैं। यहाँ गया प्रमुख औद्योगिक केन्द्र है, जहाँ जूट और सूती वस्त्रोद्योग, हस्तकरघा और स्वचालित करघा उद्योग, पत्थर तोड़ने और कलात्मक मूर्तियां बनाने का उद्योग, तिलकुट–उद्योग, पर्यटन एवं होटल उद्योग का विकास हुआ है। गुरारू में चीनी का कारखाना है।[9]

निष्कर्ष

शोध विषय के विभिन्न आयामों के अध्ययन से स्पष्ट कि औपनिवेशिक काल से लेकर आज तक बिहार में उद्योग, वाणिज्य एवं व्यापार का क्रम जारी है। इन तीनों आयामों में सबसे कम प्रगति उद्योग का हुआ है। शुरू के दिनों में बिहार में अकेले चीनी मिलों की संख्या 33 थी जो आज सभी बंद के कगार पर हैं या बंद हो चुक है। बिहार में निम्न स्थानों पर क्रमशः चीनी मिले थी–दरभंगा की सकरी, लोहट व रैयाम चीनी मिल, मुजफ्फरपुर की मोतीपुर चीनी मिल, पूर्वी चम्पारण की लौरिया, नवादा की वारसिलीगंज, गोपालगंज की हथुआ व वैशाली की गोरोल व गया की गुरारू चीनी मिल जैसी कई अन्य ऐसी चीनी मिले और बिहार के छपरा जिले के मढ़ोरा में मॉर्टन चॉकलेट के कारखाने भी बंद पड़े हैं। गया में रेलवे स्टेशन के सटे सूती कपड़े बनाने का कारखाना था वह जंगल में तब्दील को चुका है। जरूरत इस बात की है कि सरकार को इस दिशा में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है ताकि बिहार में कारखाने लगाये जा सके और इन कारखानों में बिहार से पलायन करने वाले लाखों मजदूरों को काम मिल सके। शोधार्थी शोध पत्र के माध्यम से बिहार सरकार, निवेशकों और बिहार में निवास करने वालों को जागृत करना चाहती

हैं, ताकि बिहार आर्थिक रूप से अपने–आप को मजबूत कर सके। जब आर्थिक स्थिति मजबूत होगा तब स्वतः स्फूर्त भाव से बिहार में परिवर्तन की लहर आयेगी और बिहार उत्तरोत्तर आगे बढ़ पायेगा। बिहार में उद्योग लगाने के सभी आवश्यक तत्व मौजूद हैं, इसे सिर्फ सही तरीके से लागू करने की आवश्यकता है।[10]

संदर्भ सूची

1. दत्त, आर. सी. (1920) *''द इकानॉमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया'',* खण्ड–2, वेम बुक्स, लंदन।
2. सिंह, अयोध्या (1977) *''भारत का मुक्ति संग्राम''* खंड–2, प्रकाशक संस्थान, नई दिल्ली, पृ. 38।
3. असकरी, सैय्यद हसन; अहमद कमामुद्दीन, (1983) ''कम्प्रेहेंसिव हिस्ट्री ऑफ बिहार'' पार्ट 3, जटाशंकर झा, काशी प्रसाद जयसवाल शोध संस्थान, पटना, पृ. 2।
4. पूर्वोक्त, पृ. 22।
5. पाण्डेय अंशुमान (1980) *''बिहार के उद्योग'',* ओम बुक्स इंटरनेशनल कॉलेज आफ आर्ट, लखनऊ, पृ. 57।
6. कुमार, अजीत (2005) *''बिहार का इतिहास''* जानकी प्रकाशन, चौहट्टा, पटना, पृ. 235।
7. दत्ता, के.के. (1957) *''द कम्प्रहेंसिव हिस्ट्री ऑफ बिहार''* वाल्यूम–I, II, III, काशी प्रसाद जयसवाल शोध संस्थान पटना, पृ. 105।
8. कुमार, अजीत (2005) *''बिहार का इतिहास''* जानकी प्रकाशन, पटना, पृ. 237।
9. पूर्वोक्त, पृ. 240–241।
10. भट्टाचार्य, सब्यसाची; (1990) *''आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास''* 1850–1947, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 6।

****